ISSN : 2583-2948

योगी संग योगी, भोगी संग भोगी

मनजीत कौर 'जीत'
बंगलूरू, कर्नाटक

योगी संग योगी, भोगी संग भोगी

जीव हम धरती के, जन्में, बढ़ें, कुच कर जाएं

हो मानव के आचरण से, भला -बुरा सम्पूर्ण सृष्टि का

मानवता का संरक्षण, संवर्धन, कर्त्तव्य है मानव का

सत्संग से बनें शुद्ध विचार, संस्कार जीवन में

सत्य का करें संग, जैसा संग, वैसा रंग

सत्संग से गुण में बदलें अवगुण यश मान सम्मान मिले

सीप मे पडे स्वाती बूंद, बन जाये मोती

सर्प के मुँह में पडे , बन जाये विष

धूल करे वायु का संग, उड़े आसमान में

अगर करें पानी का संग, बने कीचड़ पैरों तले

निर्मल, पावन वर्षा की बूंदें, मलिन हो धरती पर

लोहा बने सोना पारस की संगत से

मानव हो सफल सत्य की संगत से

सुख-दुःख बंधे कर्मों से, कर सत्संग हे मानव

बुरे कर्म का बुरा नतीज़ा , हो पतन तेरा हे मानव

योगी संग योगी, भोगी संग भोगी , सत्य ये मानव

सत्संग से बने दृढ़ व्यक्तित्व , न चढे कोई और रंग

रहे नियंत्रण स्वयं के मन, विचार पर जैसे

चंदन का वृक्ष न छोडे सुगंध सर्प की संगत से

पार उतरे जीवन रूपी नौका सत्संग की पतवार से

पार उतरे 'जीत' की नौका भवसागर के जंजाल से